बौद्ध दर्शन और हिंदी के समकालीन नाटक

डॉ. स्नेहलता

समकालीन हिंदी नाटककारों ने अपने नाटकों में बौद्ध दर्शन और बौद्ध चेतना को चित्रित किया है। समकालीन नाटकों में सत्य, अहिंसावादी विचारधारा दुःख एवं उसके कारणों को उद्घाटित किया गया है। समकालीन हिंदी नाटक अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँच गए है। जिसमें नई सोच, नई दृष्टि, नए धरातल पर आज की समस्याओं को उभारा गया है। आज के परिवेश के नाटकों में बौद्ध दर्शन के तथ्यों को खोजना एक कठिन एवं चुनौती भरा कार्य है। क्योंकि अब तक के जो नाटक मैंने पढ़े है, उन सभी में बौद्ध दर्शन के सन्दर्भ अदृश्य रूप में ही दृष्टिगोचर हुए है। समकालीन नाटकों में बौद्ध दर्शन के तत्वों में थोडा सा ठहराव आ गया है। इस ठहराव में गति लाने के लिए नाटककारों ने अपने नाटकों में अदृश्यता के साथ बौद्ध चिंतन को उद्घाटित किया है इसी अदृश्यता को मैं नाटको के माध्यम से केन्द्रित करने का प्रयास करुगी ।

भारतीय दर्शन की अवधारणा एवं स्वरुप :

दर्शन शब्द का अर्थ, दृष्टि या देखना है। भारतीय दर्शन का आरम्भ वेदों से होता है। 'वेद'; भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य आदि सभी के मूल स्रोत हैं। भारतीय दर्शन उस विद्या को कहा जाता हैं जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार हो सके। इसप्रकार दर्शन का अर्थ है तत्व दर्शन या तत्व का साक्षात्कार करना। सत्य के दर्शन से ही हृदय की गांठे खुलती है। मनु के अनुसार सम्यक दर्शन प्राप्त होने पर कर्म मनुष्य को किसी बंधन में नहीं डाला सकता तथा जिसकी सम्यक दृष्टि नहीं है वे ही संसार के महामोह और जाल में फंस जाते है। भारतीय मनीषियों के उर्वर मस्तिष्क ने कर्म, ज्ञान और भक्तिमय त्रिपथगा के प्रवाह को अद्भुत् ढंग से मानवों के आध्यात्मिक कल्मष को धोकर पवित्र, नित्य, शुद्ध-बुध्द, और सदा स्वच्छ बनाकर मानवता के विकास में योगदान दिया है।

बौद्ध धर्म एवं बौद्ध दर्शन की अवधारणा :

बौद्ध दर्शन से अभिप्राय उस दर्शन से है जो भगवान बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया। बुद्ध के अनुसार सत्य के चार मार्ग है ; **1. सम्यक संकल्प** में मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना। **2. सम्यक वाक्** में हानिकारक बातें और झूठ न बोलना। **3. सम्यक कर्म** के अंतर्गत हानिकारक कर्म न करना। **4. सम्यक जीविका** के अंतर्गत कोई भी स्पष्ट या अस्पष्ट हानिकारक कार्य न करना।

बौध्द दर्शन, दर्शनों का समूह है, और इस दर्शन के प्रति दार्शनिकों की मान्यताओं के अनुसार इसे चार भागों में विभक्त किया जा सकता हैं : **वैभाषिक, सौप्रन्तिक, योगाचार, माध्यमिक**। इन्हीं तत्वों एवं तथ्यों के अनुरूप बौद्ध धर्म को समझाया गया हैं। आत्मा एक अदृश्य पदार्थ है इसलिए भगवान बुध्द ने आत्मा के विषय में अधिक नहीं कहा उन्होंने सत्य

की खोज पर अधिक बल दिया, साथ ही इस दर्शन में तथ्यों की भी खोज की गई। बौद्ध दर्शन के चार सत्य निम्न हैं- **दुःख, दुःख के सामूहिक कारण, और दुःख निरोध के पहलू, दुखों का निवारण किस प्रकार किया जाए**। बुध्द के अनुसार 'परिवर्तन ही सत्य है, और आत्मा भी मनोभावों और विज्ञानों की धारा हैं'। आत्मा के न मानने पर भी बौध्द धर्म करुणा से ओत-प्रोत है तथ्यों व तत्वों के माध्यम से सत्य का साक्षात्कार बौद्ध दर्शन ने किया है। इन्हीं सब तथ्यों व तत्वों को समकालीन नाटकों में खोजने और सत्य, धर्म, नीति, आचरण के बिन्दुओं को तलाशने का प्रयास किया गया है।

नाटकों के उद्भव व विकास की रूप रेखा :

'नाटक' साहित्य की अत्यधिक सशक्त एवं प्रभावशाली विधा है और यह दृश्य काव्य है, श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य में नाटक श्रेष्ट है। इसे पंचमवेद के नाम से जाना जाता है। रंगमंच इस विधा का प्राणतत्व है जिसमें पाठक एवं दर्शकों को रसानुभूति होती है। नाटक विधा अपनी प्रस्तुति एव नवीनता को लेकर बहुचर्चित है। नाटक मानव जीवन के व्यापक सन्दर्भों और यथार्थ जीवन के विविध आयामों से विषय चुनकर समाज के लिए ही अपने रूप का निर्माण करता है। शब्दों एवं पात्रों की वेशभूषा, आकृति, भाव-भंगिमा, क्रियाओं के अनुकरण और भावों के अभिनय तथा प्रदर्शन क्रिया के द्वारा अपनी अनुभूतियों को देश व समाज के निकट लाना इस विधा की मुख्य प्रवृति है।

हिंदी नाटक के आलोचक **डॉ. दशरथ ओझा** ने नाटक की परिभाषा पर विचार करते हुए कहाँ है -'जब लोगों की क्रियाओं का अनुकरण अनेक भावों और अवस्थाओं से परिपूर्ण होकर किया जाए तो वह नाटक कहलाता है'। *(हिंदी नाटक उद्भव और विकास--डॉ. दशरथ ओझा-पृष्ठ -34)* **नेमीचन्द्र जैन** ने भी इस प्रकार अपने विचार व्यक्त किया है-'अपनी मूल प्रवृति की दृष्टि से नाटक वह संवादमूलक कथा है जिसे अभिनेता रंगमंच पर नाट्य व्यापार के रूप में दर्शक वर्ग के सामने प्रस्तुत करते है' *(हिंदी नाटक में समसामयिक परिवेश -डॉ विपिन गुप्ता -34)* **डॉ.गिरीश रस्तोगी** के अनुसार-'साहित्य की अन्य विधाओं के परिप्रेक्ष्य में जब हम नाट्यविधा के अधिक उत्कृष्ट या विशिष्ट होने का समर्थन करते है तो इसी के आधार पर कि उसकी सम्प्रेषणीयता की पैठ मानव मन की गहराईयों तक अधिक है'।

समकालीन हिंदी नाटकों के विविध आयाम एवं उसकी अवधारणा :

हिंदी नाटक का प्रथम उत्थान वस्तुतः भारतेंदु के उदय से ही माना जाता है। इस युग के नाटककारों में ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावना से सम्बंधित विषयों के अनुसार नाटकों की रचना हुई है। इसके बाद द्विवेदी युग में इतिवृतात्मक नाटको का अधिक प्रचार प्रसार रहा साथ ही इनमें मौलिक नाटकों का आभाव भी रहा। प्रसाद युग में इतिहास से सम्बंधित नाटको का प्राधान्य रहा। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाट्य कौशल से एवं रचनाओं द्वारा एक ओर अतीत के गर्भ में छिपी भारतीय संस्कृति के उद्दात्त मूल्यों को वर्तमान जीवन परिवेश से जोड़ने का प्रयास किया, तो दूसरी ओर रचनात्मक दृष्टिकोण पर भावी नाटककारों को दिशा-संकेत भी दिया है। इसके बाद के नाटकों में समाज के हर पहलुओं को दृष्टिगत किया गया है।

समकालीन हिंदी नाटकों में बौद्ध दर्शन की अवधारणा :

बौद्ध धर्म की **सम्यक दृष्टी, सम्यक वाणी, सम्यक संकल्प को 'अष्ठानिक मार्ग या सम्यक मार्ग'** कहा जाता है। यहाँ मार्ग उनके 'धर्मचक्र' प्रवर्तन के अंतर्गत समाविष्ट है भगवन बुद्ध ने सम्यक दृष्टि का अंतिम उद्देश्य अविद्या का विनाश माना है। मनुष्य को मिथ्या धारणाओं का विरोध करने लिए कहा गया है। उन्हें हमारे योग्य होना चाहिय अयोग्य नहीं। सम्यक

वाणी में व्यक्ति सत्य ही बोले असत्य नहीं साथ ही व्यक्ति दूसरों की बुराई न करे और दूसरों के बारे में गलत बात न फैलाए। व्यक्ति की वाणी बुद्धि संगत हो साथ ही सरलता और सौद्देश्य रहे।

बुद्ध ने नैतिक आचरण के पाठन पर बल दिया है। इसे **'दशशीला'** के नाम से जाना जाता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हचर्य, नृत्य आदि का त्याग, असमय भोजन न करना, सुगंधित वस्तुओं का त्याग आदि तत्वों को अपने प्रवचनों में कहा है। बुद्ध के विचारों एवं प्रवचनों एवं दर्शन को समकालीन नाटकों में देखा जा सकता है। समकालीन नाटककारों में **नरेंद्र मोहन** कृत 'सींगधारी', 'नो मैन्स लैंड', 'द राइजिंग:मंगल पांडे', 'ब्लैक-व्हाइट', **हबीब तनवीर** कृत 'आग की गेंद', 'जहरीली हवा', 'राज रक्त', **स्वदेश दीपक** का 'कोर्ट मार्शल', **नादिरा जहीर** कृत 'सकुबाई', 'सुमन और सना', **दया प्रकाश सिन्हा** का 'अपने-अपने दांत', **शुशील कुमार सिंह** का 'अलख आजादी की', आदि लिए जा सकते हैं। जिनमें बौद्ध दर्शन का रूप हम देख सकते है।

भीष्म सहानी कृत 'हनुष' में सुक्ष्म स्तर पर मानवीय स्थिति व नियति प्रस्तुत की गयी है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विचारधारा 'हनुष' के जीवन के यथार्थ परिस्थितियों के साथ चलकर शोषक समाज के शोषित चरित्र का पर्दाफाश करती है। 'कबीरा खड़ा बाजार में' में साम्प्रदायिक और ऊँच-नीच के भेदभाव पर प्रहार किया गया है। भीष्म सहानी ने जीवन की यथार्थ परिस्थितियों, ऊँच-नीच वाली प्रवृति के माध्यम से बौद्ध दर्शन को अपने नाटकों में उद्घाटित किया है।

लक्ष्मीकांत वर्मा कृत 'रोशनी एक नदी में' आज के जीवन में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण किया है। इन्होंने घर-परिवार, धर्मनीति, समाज, व्यक्ति, आज की व्यवस्था पर प्रश्न उठाए है, किन्तु किसी का समाधान नहीं दिया है। इनके नाटकों में हम पाते हैं कि मानवीयता का मूल्य इतना गिर गया है कि मनुष्य और पशु में कोई भेद नजर नहीं आता। इन्होंने विसंगतियों को सामने लाते हुए पूरी विडंबना को मूर्त कर दिया है। इनके नाटकों में मानवीय मूल्यों के अंतर्गत हम बौद्ध विचार को पाते है।

हबीब तनवीर कृत 'आगरा बाज़ार' नाटक में नायक की भी कोई कल्पना नहीं है। आगरा के एक बाजार तथा कोठे के दृश्यों से जुड़ी संवेदनशील मानवीय अनुभूतियों से साक्षात्कार कराती है। यह नाटक लोक जीवन के परिवेश को गहरे प्रभाव के साथ उजागर करता है। सत्ता के भ्रष्टाचार और क्रूर व्यवस्था में व्यक्ति का अमानवीय चित्रण कर बौद्ध विचार को उठाने का प्रयास किया गया हैं।

नरेंद्र मोहन के नाटक जन-चेतनायुक्त हैं। 'कहै कबीर सुनो साधो', 'कलंदर' तथा 'अभंग गाथा' का सम्बन्ध पाँच-छः सौ साल पुराने इतिहास से हैं, तो 'सींगधारी', 'नो मैंस लैंड', तथा 'मिस्टर जिन्ना' का सम्बन्ध हमारे युग के साथ है। इनके नाटकों में समूहगत स्वभाव अपने परिवेश और अपनी संवेदना के साथ विभिन्न व्यक्तित्व ग्रहण करते है। आपके नाटकों में वातावरण और व्यावहारिक चरित्रों की परिकल्पना की पुष्टि की है। समकालीनता, आधुनिकता, विद्रोह, संघर्ष, यथार्थ, रूमानियत, प्रामाणिक अनुभूति आदि अवधारणाओं का उपयोग अधिक दिखाई देता है। इसके अंतर्गत समकालीन साहित्य को परखा जा सकता है। इनमें संवेदना और नई सोच का दायरा काफी विस्तृत हुआ है जैसे -वैयक्तिक कुंठाओं, आकांक्षाओं और व्यक्ति सरोकारों से लेकर सामाजिक, राजनीतिक चिंताओं और विद्रूपताओं तक कि बौद्ध विचारधारा को हम पाते हैं। निम्न पंक्ति में हम बौद्ध चिंतन को 'शब्दों' के माध्यम से देख सकते हैं :

"एक दहकता शब्द
जलाकर राख बना देता है
पूरी पशु सत्ता को
एक दहकता शब्द"

नरेंद्र मोहन कृत नाटक की निम्न पंक्ति में बौद्ध दर्शन के दुःख की वेदना को हम देख सकते हैं कि किस प्रकार शब्द पूरी दुनिया को जला सकता है इसलिए शब्दों को एसे बोलना चाहिए की दूसरों को हमारे द्वारा बुरा न लगे साथ ही सामने वाला व्यक्ति दुखी न हो।

"क्यों उजड़ते हो खानकाहो को
सूफी दरवेशों की खानकाहों को"

इस पंक्ति में भी बौद्ध दर्शन सत्य व् तथ्य को पाते हैं।

'सींगधारी नेता है
सनसनाती हवा में उड़ती हुई पत्तियों'

इन पंक्तियों के अंतर्गत हम पाते है की किस प्रकार सृष्टि का नियम हवा के माध्यम से पत्तों के साथ-साथ मानव को भी उड़ा लेने की क्षमता रखता है। जीवन की नीरसता और सृष्टि के साक्षात्कार को नाटककार ने अपने नाटक में समकालीन परिदृश्य के साथ बौद्ध दर्शन को दर्शाने का प्रयत्न किया गया हैं। हम पाते है कि कई नाटकों में जाति एवं समाज की विसंगतियों एवं कुंठा त्रासदी के मानदंडो को नाटककारों ने उभारे है।

"हिन्दू हिन्तुस्तान जायेगा
मुसलमान पाकिस्तान जायेगा
वेयर आई गो "

इस पंक्ति में बिभाजन की विसंगतियों को उभरा गया है कि एक एंग्लो इंडियन देश विभाजन के बाद कहाँ जाए । मानवीय मूल्यों को इन पंक्तिओं में दर्शाया गया हैं । किस प्रकार एक व्यक्ति अपनी जमीन तलाशने की कोशिश कर रहा हैं । अपने अस्तित्व को खोजने की कोशिश में मानसिक संवेदना व्यक्त कर रहा हैं ।

निष्कर्ष रूप से नाटको के माध्यम से बौद्ध दर्शन के चार सत्यों को तलाशने का प्रयास किया गया है दुःख, दुःख के सामूहिक कारण, और दुःख निरोध के पहलु, दुखों का निवारण किस प्रकार किया गया हैं। बुद्ध के मार्ग दर्शन के सभी पक्षों को समकालीन हिंदी नाटकों के परिप्रेक्ष में दर्शाने एवं इन तथ्यों की व्याख्या करने का प्रयास हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांत : वेब दुनिया
2. बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन
3. बौद्ध दर्शन : विकिपीडिया
4. बौद्ध धर्म दर्शन एवं चावार्क दर्शन --गौतम बुक सेंटर
5. भाषा द्वैमासिक पत्रिका -अंक 270 वर्ष 56 जनवरी-फरवरी -2017
6. बौद्धधर्म (दर्शन, साहित्य तथा सम्प्रदाय)--हिमालय बौद्ध संगम -प्रो.चौडुरी उपेन्द्र राव
7. हिंदी नाटक उद्भव और विकास -- डॉ. दशरथ ओझा
8. हिंदी नाटक में समसामयिक परिवेश -डॉ विपिन गुप्ता

संपर्क :

डॉ. स्नेहलता
पीडीऍफ़ फेलो,
उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद, तेलंगाना
vaibhavdingya@gmail.com